Date – 22/08/2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – II (Hons.)

Topic – Theory of Inference – II

Scanned with CamScanner

यदि अनुमान शब्द की व्युत्पत्ति को देखा जाए तो वह पूर्णतः स्पष्ट हो जायेगा।

व्यक्ति व्युत्पत्ति के अनुसार, जैसा कि ऊपर बतलाया गया है, अनुमान शब्द 'अनु' उपसर्ग में 'मा' धातु लगाकर बना है जिसके अनुसार अनुमीयते इति अनुमानम् या अनुमिति: अनुमानम् - अनुमान का अर्थ है; अनुमिति अनुमान है। अनुमिति अनुमानजन्य ज्ञान को कहते हैं। अतः इस अर्थ में अनुमान और अनुमिति दोनों को एक माना गया है। व्युत्पत्ति के अनुसार अनुमान का दूसरा अर्थ अनु उपसर्ग और मा धातु के साथ ल्युट प्रत्यय लगाकर बताया जाता है। इस अर्थ में अनुमीयते अनेन इति अनुमानम् अनुमान है। अनुमान अनुमिति का कारण (साधन) है, इसलिए स्वीकृत अर्थ में अनुमितिकरणम् अनुमानम् - यह अनुमान को परिभाषित करता है, दोनों ही अर्थों में अनु उपसर्ग लिंग- लिंगी (हेतु- साध्य) संबंध एवं हेतु-ज्ञान को अभिव्यक्त करता है। हेतु और साध्य के बीच संबंध की स्थापना अनुभव या प्रत्यक्ष से होती है। अतः व्याप्ति-ज्ञान प्रत्यक्षाश्रित है। इस व्याप्ति - ज्ञान के आधार पर ही हेतु का प्रत्यक्ष ज्ञान होने पर साध्य का ज्ञान होता है, अर्थात् व्याप्ति - स्मरण के बाद जो हेतु-ज्ञान होता है, वह भी व्याप्ति - स्मरणाश्रित है। इसलिए अनुमान का आधार व्याप्ति ज्ञान है। किंतु हेतु का प्रत्यक्ष ज्ञान किसी पक्ष में होता है, और उसी पक्ष में साध्य का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इसलिए "हेतु-ज्ञान" पक्षता या पक्षधर्मताज्ञान का बोध कराता है। इस प्रकार व्युत्पत्ति की दृष्टि से भी, चाहे अनुमान अनुमिति हो या अनुमिति का कारण, दोनों ही हालतों में व्याप्तिज्ञान और पक्षधर्मता ज्ञान पर आधारित है। इसलिए कहा जाता है कि "अनुमान वह ज्ञान है जो व्याप्तिज्ञान और पक्षधर्मताज्ञान के पश्चात उत्पन्न होता है"।

यही कारण है कि वात्स्यायन ने भाष्य में अनुमान की परिभाषा इन शब्दों में दी है- "ज्ञात लिंग द्वारा लिंगी रूप अर्थ का जो बाद में ज्ञान उत्पन्न होता है, उसे अनुमान कहते हैं।"

इस परिभाषा में बतलाया गया है कि-

(क) हेतु या लिंग ज्ञात होता है, अर्थात् उसका प्रत्यक्ष ज्ञान है।

(ख) साध्य या लिंगी का ज्ञान बाद में होता है, अर्थात् हेतु के प्रत्यक्ष ज्ञान के बाद साध्य का ज्ञान होता है।

(ग) अर्थ का तात्पर्य अनुमान का विषय है जो कोई वस्तु या घटना है। अनुमान का विषय ही साध्य कहलाता है। अतः अर्थ का तात्पर्य साध्य से है।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि इस परिभाषा के अनुसार अनुमान हेतु के प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर साध्य का ज्ञान होता है। हेतु-प्रत्यक्ष से साध्य-अनुमान किस प्रकार होता है - यह स्पष्ट नहीं किया गया है। इसलिए यह परिभाषा भी अस्पष्ट है। वाचस्पति मिश्र ने न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका में 'अर्थ' पद का तात्पर्य बतलाते हुए इस अस्पष्टता को दूर करने का प्रयास किया है। उनके शब्दों में "व्याप्तिज्ञान आदि से जिसका साधन किया जाए, वही 'अर्थ' है।" वात्स्यायन की पहली परिभाषा में व्याप्तिज्ञान का स्पष्ट उल्लेख है, लेकिन 'आदि' शब्द का प्रयोगकर शायद इस कमी को दूर किया गया है। इसलिए वाचस्पति मिश्र ने व्याप्तिज्ञान और पक्षधर्मताज्ञान द्वारा प्राप्त ज्ञान को "अर्थ" की संज्ञा दी है। 'साधन' शब्द का तात्पर्य अनुमान के अभीष्ट विषय का ज्ञान है, जो व्याप्ति और पक्षधर्मता दोनों के ज्ञान के बाद मिलता है।

न्यायवार्तिक के लेखक उद्योतकर ने वात्स्यायन की पहली परिभाषा को उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हुए उसकी कमी को दूर करने का प्रयास किया है। उद्योतकर के अनुसार लिंग-लिंगी अर्थात् हेतु और साध्य के संबंध के ज्ञान होने पर पक्ष में हेतु का ज्ञान होने से अनुमान की इच्छा करने वाले व्यक्ति को व्याप्ति-स्मरण होता है और उसके बाद हेतु का पुनः ज्ञान होता है। हेतु का यह तीसरी बार ज्ञान अनुमिति का कारण अर्थात् साधन है। इस साधन को अनुमान कहते हैं, और इसके द्वारा प्राप्त ज्ञान अनुमिति कहलाता है।

Scanned with CamScanner